This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक .....

1148

B.A. (Hons.) बी.ए. (ऑनर्स) / III B

HINDI – Paper VIII

हिन्दी – प्रश्नपत्र VIII

(हिन्दी नाटक)

(प्रवेश-वर्ष 2000 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 38**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) हा ! यह वही भूमि है जहाँ साक्षात् भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के दूतत्त्व करने पर भी वीरोत्तम दुर्योधन ने कहा था,

"सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" और आज हम उसी भूमि को देखते हैं कि श्मशान हो रही है । अरे यहाँ की योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग, उदारता, धन, बल, मान, दृढ़चित्तता, सत्य सब कहाँ गए ? अरे पामर जयचंद ! तेरे उत्पन्न हुए बिना मेरा क्या डूबा जाता था ? हाय अब मुझे कोई शरण देने वाला नहीं !

अथवा

काफिर काला ! नीच पुकारूँ, तोड़ू पैर और हाथ ।

दूँ इनको संतोष खुशामद, कायरता भी साथ ।।

मरी बुलाऊँ, देश उजाड़ूँ, महँगा करके अन्न ।

सबके ऊपर टिक्कस लगाऊँ, धन है मुझको धन्न ।। 5

(ख) भयानक समस्या है । मूर्खों ने स्वार्थ के लिए साम्राज्य के गौरव का नाश करने का निश्चय कर लिया है । सच है, वीरता जब भागती है तो उसके पैरों से राजनीतिक छलछन्द की धूल उड़ती है ।

अथवा

न जाने मेरे किस अपराध पर संदिग्ध-चित्त होकर उन्होंने जब मुझे निर्वासित किया, तब मैंने उनसे अपने स्त्री होने के अधिकार की रक्षा की भीख मांगी थी । वह भी न मिली और मैं बलि-पशु की तरह अकरुण-आज्ञा की डोरी में बंधी हुई शकदुर्ग में भेज दी गई ..... । 5

(ग) सुनिये साहिब, मैं हूँ तो नीच जात का अनपढ़ जुलाहा, पर एक बात तो मैं भी समझ सकता हूँ । जब तक किसी की नज़र में एक ब्राह्मण है और दूसरा तुर्क, तब तक वह इंसान को इंसान नहीं समझेगा । मैं इन्सान को इन्सान के नाते गले लगाने के लिए, मंदिर के सारे पूजा-पाठ और विधि-अनुष्ठान छोड़ता हूँ, और मस्जिद के रोजा-नमाज़ भी छोड़ता हूँ । मैं इन्सान को इन्सान के रूप में देखना चाहता हूँ ।

अथवा

भाई जान, शादी एक गहरी समस्या है, आप उसके साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते । मैं पूछता हूँ, आप एक फैक्ट्री में हर तरह का विज्ञान, कानून, विशिष्ठ ज्ञान लगाते हैं । फिर क्या कारण है कि जीवन को ऐसे परमात्मा के भरोसे छोड़ दिया जाय कि उसमें आदमी की सस्ती-से-सस्ती और निकम्मी से निकम्मी शक्तियाँ ही सिर्फ़ काम में लायी जाएँ । आप कहते हैं कि औरत को समझ नहीं पाता । जनाब, यह सब कोरी बातें हैं, बातें ! समझने की क्या जरूरत है ? मशीन की एक पुली दूसरी पुली को नापने, जोखने, समझने नहीं जाती । स्त्री-पुरुष तो जीवन की मशीन के दो पुरज़े हैं – दो । 5

2. ""भारत-दुर्दशा' में साम्राज्यवाद के विरुद्ध पहली बार साहित्य में राजनीतिक चेतना उभरती दिखाई देती है ।" विवेचन कीजिए ।

अथवा

"भारतेन्दु का 'भारत-दुर्दशा' सफल और महत्त्वपूर्ण रंगनाटक है ।" विचार कीजिए । 8

3. 'ध्रुवस्वामिनी का ऐतिहासिक कथानक अनेक स्तरों पर आधुनिक जीवन का स्पर्श करता है ।' – इस कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' के आधार पर प्रसाद की रंगपरिकल्पना की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए । 8

4. 'कबिरा खड़ा बजार में, सामयिक संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण कृति सिद्ध होती है ।' अपना मत दीजिए ।

अथवा

'दीपदान' शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । 7